जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

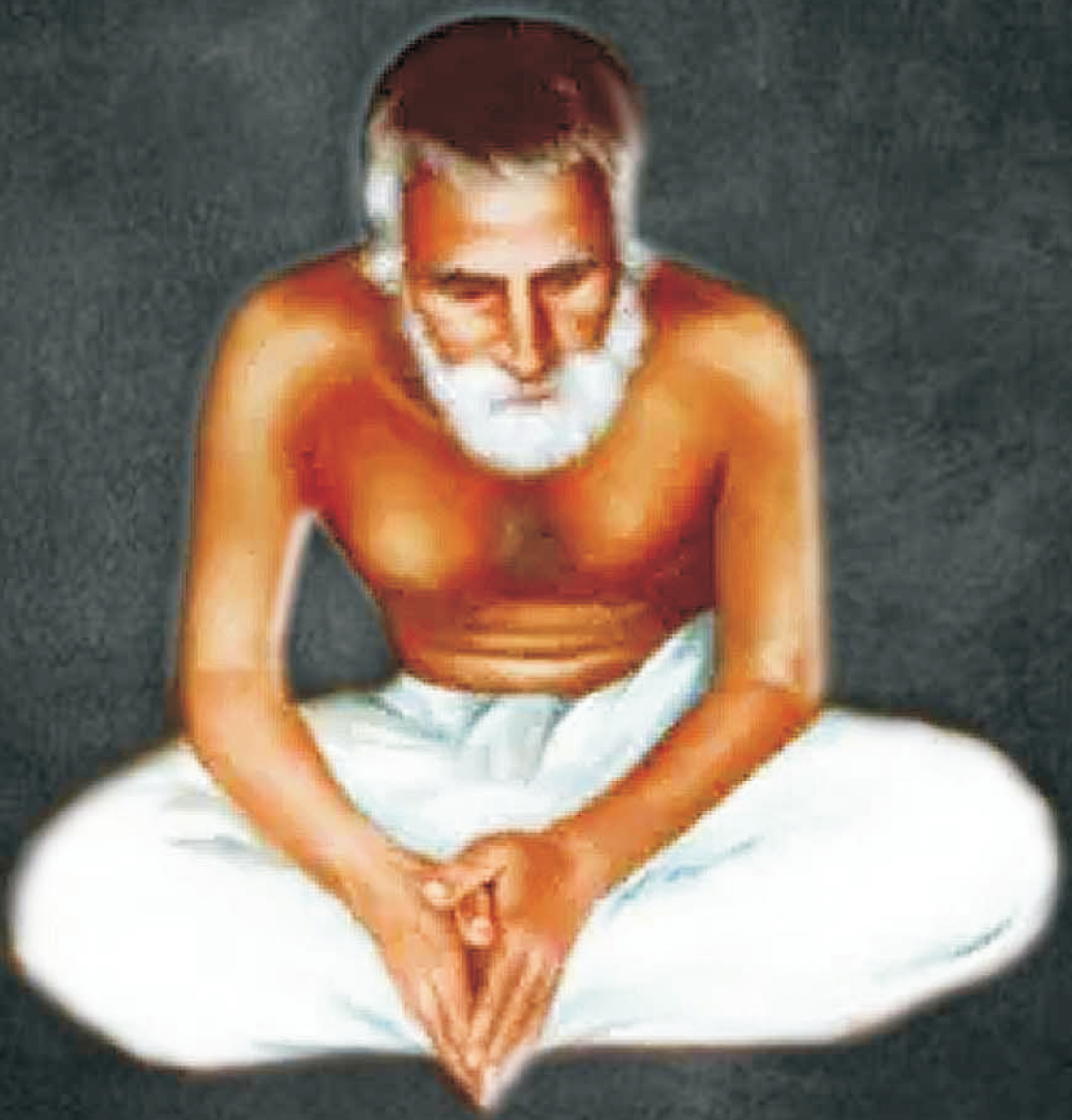

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

अन्तर्यामी श्रीगौरकिशोर

एक दिन रात के 10 बज गए थे, तभी श्रील बाबाजी महाराज हठात् बोल उठे, देखो! देखो!! एक भागवत पाठक पावना जिला में जाकर इस समय एक विधवा स्त्री का धर्म नष्ट कर रहा है। हाय! हाय! यह उद्दण्ड लोग किस प्रकार से धर्म के नाम को कलंकित कर रहे हैं।

बाबाजी महाराज इस प्रकार से यह सब बातें कह रहे थे

जैसे वे उस दुराचारी व्यक्ति का वह दुष्कर्म स्वयं ही प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हों। फिर कहने लगे– "महाप्रभु मुझे बहुत सारी बातें बता देते हैं। हरिसभा के मोहल्ले में एक प्रसिद्ध पाठक है, वह मेरे यहाँ आकर बीच-बीच में अपना पाण्डित्य दिखाने की कोशिश करता है एवं देश-विदेश में जाकर अपने को पण्डित नाम से जाहिर करके भागवत पाठ के बदले में धन इकट्ठा करता है। लोग उसको अन्दर से नहीं जानते; उसने एक विधवा स्त्री

को अपने पास रखा हुआ है। जब लोग उससे उस स्त्री के बारे में पूछते हैं, तब वह उसे अपनी पत्नी कहकर परिचय करवाता है। वह भागवत पाठ करके जो पैसे कमाता है उससे इस कुलटा रमणी के लिए हाथों की चूड़ियां, बालों का तेल, पाँव की अलता {मेंहदी} आदि खरीदकर देता है। इससे बढ़कर अपराध एवं पाषण्डता और क्या होगी?'

यहाँ बाबाजी महाराज जी का यही कहना था कि साधु तो साधु ही होते हैं लेकिन कुछ

असाधु लोगों को साधु का बनने का ढ़ोंग कर 'साधु' नाम की मर्यादा नाश करना ही एकमात्र काम हो गया। इसका परिणाम बहुत भयंकर है। अज्ञानता के कारण लोग पाप करते हैं। लेकिन धर्म के नाम पर जब कोई पाप करता है तब उससे बढ़कर पाषण्डता और कुछ भी नहीं होती है।

श्रीलगुरुदेव